शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

समकालीन स्त्रीवादी कहानियों में नारी–विमर्श

सीमा, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी, हिसार, हरियाणा

नारी मन की व्यथा को पूर्ण रूप से नारी ही व्यक्त कर सकती है। इस कथन को नवें दशक की महिला कहानीकारों ने सिद्ध कर दिखाया है। अर्थात् स्त्री ही स्त्री के हृदय को पूर्ण रूप से समझ सकती हैं। उसकी वेदना, संवेदना और हृदयंगम अनुभूतियों को उजागर करने में सफल हुई है। अतः हिंदी की महिला कहानीकारों ने अपने वर्ग की समस्याओं, विडंबनाओं और अन्याय, अत्याचारों और कुण्ठाओं को अपनी लेखनी का माध्यम बनाया है। जिससे समाज और स्त्री जगत की दृष्टि नारी की विविध समस्याओं की ओर अग्रसर हुई है। इन कहानियों से नारियों में चेतना और जागरूकता का उदय हुआ और इन समस्याओं को लेकर महिला कहानीकारों ने सैंकडों कहानियाँ रची हैं। इसमें हिंदी कहानी के पाठकों व हिंदी जगत को नारी जीवन से जुड़ी भागदौड़, उनकी अपनी निजी जिंदगी की झलक, अपनी इच्छा आकांक्षाओं, मर्यादाओं, शारीरिक और मानसिक अत्याचारों, द्वंद्वों, बेचैनियों, सम्मान की जद्दोजहद से गुजरती नारी की समस्याओं को बारीकी से जानने का मौका मिला है। इन नारी कहानीकारों ने स्वयं को पत्नी, पुत्री, बहन, माँ, भाभी आदि रूपों में प्रस्तुत करने में सफलता पाई है। इसने नारी मुक्ति की चते ना व नारी विमर्श जैसे मुद्दों को जन्म दिया तथा इससे नारी मुक्ति और नारी अस्मिता की लड़ाई को बल मिला। इससे प्रेरित होकर नारी स्वतंत्रता, नारी सम्मान के अधिकार जैसे विषयों को लेकर इन लेखिकाओं ने अपनी कलम चलाई। इससे नारी के लिए परम्पराओं और रूढ़ियों के बंधन से मुक्ति का रास्ता खुलना संभव हो पाया।

हिंदी कहानी जगत में अपनी लेखनी का लोहा मनवाने वाली सफल नारी कहानीकारों में मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मीना अग्रवाल, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मालती जोशी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वैसे तो आरम्भ से ही हिंदी कथा साहित्य में नारी से जुड़ी अनेकानेक समस्याओं, विडम्बनाओं आदि का उल्लेख किया गया है, परंतु नारी कथाकारों ने अपनी दुनिया को स्त्रीवादी दृष्टि से देखा। इसमें मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती आदि लेखिकाओं की सुक्ष्म परख ने नारी को अधिकार दिलाने के पक्ष में ही थी। मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानियों में नारी मन, नारी अस्मिता, उसकी पहचान और सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध साहसपूर्ण संघर्ष को उजागर किया है। वह लिखती हैं कि कवयित्री की उपेक्षा नारी कथाकार के साथ यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है कि उसे बिना लाक्षणिक भाषा का सहारा लिए अधिक खुलकर सामने आना पड़ता है। वह घिसेपीटे कथानकों और भाव को ही लेती रहे,

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

तब तक तो ठीक है, लेकिन जहाँ जीवन और जगत के व्यापक क्षेत्रों को छूने का साहस उसने किया कि प्रत्यक्ष और परोक्ष वर्जनाएँ उसकी ओर उंगली उठाती सामने आ खड़ी होती है। स्त्रियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण का चित्रण वह 'अकेली' नामक कहानी की पात्र शोभा बुआ के माध्यम से करती हैं। जो पुत्र के खो जाने और पति के त्याग देने पर अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए अड़ोस–पड़ोस और सगे–सम्बन्धियों के सभी कार्यों में सहृदय भाग लेकर अपने एकांत से लड़ती है। इस कहानी में शोभा बुआ उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो समझ में अकेलेपन के कारण बैचेनी और द्वंद्व का शिकार है। वह इतनी सहृदय स्त्री है कि जो अपने देवर के रिश्तेदारों के घर से शादी का न्योता आने के इंतेजार में व्याकुल है और उस शादी में जाने के लिए अपने पुत्र की एकमात्र निशानी सोने की अंगूठी को बेचकर उससे शादी में उपहार देने के लिए एक सिंदूरदानी खरीद लेती है। परंतु उसे कोई बुलावा न आने से बहुत ही निराश हो जाती है।

मन्नू भण्डारी की ही 'सजा' कहानी की 'आशा' एक संघर्षपूर्ण बदनसीब जीवन जीती मध्यवर्गीय आर्थिक विपन्नता की शिकार पात्र है। उसके पिता बीस हजार रुपए के गबन के आरोप में नौकरी से निष्कासित होते हैं। इस घटना से माँ का बीमार पड़ जाना, परिवार का गुजर–बसर मुश्किल होने के कारण अपने बच्चों को दूर चाची के घर पलने को भजे ना, चाची का बच्चों पर अत्याचार, शाषण, पिता को सजा से मुक्ति कराने के लिए निरंतर संघर्ष तथा चार सालों के बाद सजा से पिता को रिहा करने के बाद कहानी को सकारात्मक मोड दिया गया है। इस कहानी में संकटों से घिरे मध्यवर्ग परिवार के बिखराव, कोर्ट कचहरी के कारण आर्थिक विपन्नताओं से लड़ती महिला की जद्दोजहद पिता को गबन के कलंक से मुक्त कराने की पुत्री की लड़ाई का संतोषजनक अंत है। दूसरी तरफ नारी को सचेत करती कहानी 'स्त्री सुबोधिनी' पुरूष के यौन शाषण से बचने की प्रेरणा देती है। कहानी की नायिका मैं अपनी स्वयं पर हुए अत्याचारों को आत्मकथात्मक शैली में बयान करती है। वह अपने प्रेमी शिंदे से प्रेम करती है पर शिन्दे उसे विवाहित होने का सच छुपा कर उससे अपनी काम पिपासा पूर्ण करता है। शिन्दे के ठगी और स्वार्थी कामुक रूप का पता उसे तब चलता है, जब वह शिन्दे के निमंत्रण पर गृहप्रवेश में उसके घर जाती है। वह स्वयं को शिन्दे की कामुकता का शिकार और उसके झूठे प्रेम से ठगी जाने से मानसिक हताशा का शिकार होकर पुनः अपने हॉस्टल लौटती है। यह कहानी नवयुवतियों के कामुक और विवाहित पुरूषों के झूठे जाल से बचने और उससे सतर्क रहने की प्रेरणा देती है।

मन्नू भण्डारी ने प्रेम में धोखा खाने वाली एक और नारी का चित्रण 'एक बार और' कहानी में किया है। इस कहानी की नारी पात्र अपने प्रेमी कुंज से सच्चा प्रेम करती है और उससे विवाह करना चाहती है पर उसका प्रेमी कुंज मधु नामक दूसरी लड़की से विवाह कर लेता है। अपने प्रेमी द्वारा तिरस्कार और धोखे को अपने मन में ही दबा लेती है और मन ही मन में कुंज के प्रेम की कल्पनाओं को याद कर दुःखी होती रहती हैं। इस कहानी में लेखिका

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

ने नारी के पुरूषों के प्रति आसानी से आकर्षित होने और धोखा खाने वाली नवयुवतियों के स्वच्छ प्रेम का नकारात्मक यथार्थ चित्रण किया है। 'रानी माँ का चबूतरा' में एक ग्रामीण स्वाभिमानी एवं स्वावलम्बी नारी के संघर्ष को उजागर किया गया है। इस कहानी की नायिका गुलाबी स्वयं ही अपने शराबी पति को घर से निकाल देती है और सुरक्षा केंद्र में बच्चों को छोड़ कर मजदूरी करने जाती है। वह इतनी स्वावलम्बी है कि किसी भी गाँव के लोगों से सहायता नहीं लेती। उसके मुँह जोर और फकड़ जबान के कारण गाँव वाले उसके चरित्र पर लांछन लगाते हैं। घर लौटते समय रास्ते में बेहोशी की हालत में जब वह गाँव वालों को मिलती है तो उसके पास से मजदूरी के पाँच रुपए और अपनी बेटी के लिए खरीदी गई हरी चूड़ियों के पैकेट को देख लोगां` का संदेह दूर हो जाता है। इस कहानी में ग्रामीण स्त्री के समाज से विद्रोह और अपने बच्चों के प्रति समर्पित जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है।

मालती जोशी कृत 'सती' कहानी में परम्पराओं से चली आ रही विधवा समस्या को उजागर किया गया है। इसकी नायिका नीलम अपनी चाची और कान्ता भाभी जैसी विधवाओं पर होते अत्याचारों को देख कर दुःखी है, क्योंकि समाज और परिवार का उन विधवाओं के प्रति दुर्व्यवहार को देख कर मानसिक रूप से त्रस्त है। वह देखती है कि कांता भाभी विधवा होने पर भी नौकरी कर सास–ससुर, बच्चों, ननद की जिम्मेदारियाँ पूरी करती हैं। इसके बावजूद उन्हें अपनी सास की जली–कटी सुननी पड़ती है। अपनी ननद का विवाह करने पर भी उसकी सास उस पर कोई सहानुभूति, दया, प्रेम नहीं दिखाती। विधवाओं की इस दशा को देख कर नायिका नीलम को अपने पति के बीमार होने पर यह डर सताता है कि कहीं वह भी विधवा न हो जाये। वह मानसिक रूप से खोखली होती रहती है। उसे यह स्वीकार्य नहीं कि विधवा बन वह भी परिवार और समाज के दुर्व्यवहार का शिकार हो। अंत में यह सोचती हैं कि पति के साथ छोड़ने पर विधवा जीवन जीने के बजाए आत्महत्या कर सती हो जाए। इस कहानी में विधवा नारियों के जीवन संघर्ष की कहानी है।

मीना अग्रवाल कृत 'पीहर' कहानी में लव मैरेज की अपेक्षा अरेंज मैरेज को सही और नवयुवतियों के लिए हितकर बताया गया है। इस कहानी की नायिका लवी अपने परिवार के कहे अनुसार अपने प्रेमी आनंद को छोड़ कर धनवान व्यक्ति से शादी करती है जो उसे खुशहाल जिंदगी देता है। अपने प्रेमी से दूर होने का दुःख उसके मन से तब दूर होता है जब वह अपने भाई की शादी में अपने प्रेमी आनंद की पत्नी को देखती है। आनंद की गरीबी और अपने पति की अमीरी पर उसे अपने भग्य पर गर्व महसूस होता है। उसे अपने पति द्वारा प्राप्त जीवन सर्वपूर्ण लगने लगाता है।

सूर्यबाला कृत 'वे जरी के फूल' की नायिका रूक्की (रूक्मिनी) अनाथ होने के कारण विवाह की समस्या से त्रस्त है। वह सरकारी स्कूल में टीचर होने पर भी उसका विवाह नहीं

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

हो पाता। वह अपनी राधा मौसी के घर के पास ही एक किराए का मकान लेकर रहती है। लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से शिक्षित स्वावलंबी स्त्री के अनाथ होने के कारण विवाह की समस्या से जूझने का चित्रण किया है। महिलाओं का स्वभाव अधिक कोमल होता है। जिससे वह आकर्षण, प्रेम और घृणा आदि भावों के प्रति सरलता से आकर्षित हो जाती है। विवाहित महिलाओं की यह कमजोरी कई बार विवाहोत्तर संबंधों के कारण बनती है। चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की कहानी 'तीसरी कोशिश' की पुनिया और 'अकेला' कहानी की नायिका दोनों ही विवाहोत्तर संबंधों के कारण पुरुषों की वासना का शिकार ही नहीं होतीं, बल्कि उनसे ठगी भी जाती हैं।

उषा प्रियंवदा कृत 'नदी होती लड़की' कहानी की नायिका 'जैनी' और भी अधिक स्वतंत्र व्यक्तित्व की नजर आती है। वह पति के होते हुए भी चार्ली नामक युवक के साथ शारीरिक संबंध रखती है। इतना ही नहीं, जब उसका पति उससे संबंध बनाने आता है तो वह चार्ली को याद कर उसको मानसिक यातानाएँ देती है। जैनी के चार्ली के साथ संबंध होने की बात उसका पति जान कर भी कुछ नहीं कर पाता। वह महसूस करता है कि जैनी की आत्मा सिर्फ चार्ली की है। उसके पास तो केवल जैनी का शरीर है। जिसे जैनी एक वेश्या की तरह पूरी विरक्ति के साथ उसे सौंप देती है। इस बात के लिए वह जैनी को बात–बात पर चार्ली की याद दिला कर मानसिक यातनाएँ देता है। कुलमिलाकर समकालीन महिला लेखिकाओं का नारी के प्रति जो रूझान दृष्टिगाचे र होता है, उससे यह ज्ञात होता है कि सभी महिला लेखिकाओं ने अपने नारी पात्रों में परम्पराओं की जंजीरों को तोड़कर स्वच्छंद जीवन जीने की चाह दिखाई है। उन कहानियों में नारी अपनी मर्यादाओं के कारण मानसिक यातानाओं तथा रीति–रिवाजों के बंधनों से मुक्ति के लिए छटपटा रहीं है। नारी यौन सुख, नैतिक–नियमां` को नकारने की दृढ संकल्पी है।

संदर्भ :

1. कहानी 'राजा', मन्नू भंडारी
2. कहानी 'अकेली', मन्नू भंडारी
3. कहानी 'पीहर', मीना अग्रवाल
4. सूर्यबाला, वे जरी के फूल (मुंडेर पर) पृ.54